मेरी आखिरी ख्वाहिश

Meri akhri khvahish

लेखक का नाम :– डॉ. मीनाक्षी सुथार

Dr. Meenakshi Suthaar

ISBN: 978-93-86785-28-2
First Edition: New Delhi, 2018
Copyright 2019, डॉ. मीनाक्षी सुथार
कृष्णा फर्नीचर एण्ड़ हार्डवेयर, सलुम्बर रोड़, धरियावद जि. प्रतापगढ़ (राज.)
All rights reserved
Printed by ISARA SOLUTIONS
B-15, Vikas Puri, New Delhi 110018

मेरी आखिरी ख्वाहिश

दोपहर का समय था अचानक से दरवाजा बजने की आवाज, साथ ही बातें करने की हलचल जो खुशी को जाहिर करती है।

''बेटा दरवाजा खोल''

''हाँ! आंटी खोलती हूँ"

जैसे ही दरवाजा खुला खुशी की लहर पुरे घर में फैल गई।

ताई ने बडी माँ के पैर छुए व बड़ी आसानी से ढ़ेर सारा प्यार और आशीर्वाद पा लिया। बडी माँ के साथ उनके बडे बेटे की बहू और बेटी भी थी, कुछ विशेष काम नहीं था, बस ताई से मिलने।

ऐसा लग रहा था मानो कोई सपना आ रहा है। हल्की – हल्की नींद में थी वो आँखे खोली तो पता चला कि बड़ी माँ उसे देख रही है। वह कुछ समझ पाती उससे पहले ही बडी माँ बाहर चली गई। करवट लेकर फिर सोने का प्रयास करके आँखे मूंद ली। बाहर के कमरे से बातों की आवाजों ने उसको उठने को मजबूर कर दिया।

''बाहर कौन है यह देखने गई। किसी को नहीं जानती

यह सोचकर पुनः भीतर चली गई।''

सरस्वती को क्या पता था कि एक छोटी – सी मुलाकात से दिल का रिश्ता बंध जायेगा।

बाहर जाने की थोडी भी दिलचस्पी नहीं थी, उसमेंअब नींद पुरी तरह गायब हो गई तो ताई ने आवाज लगाई

''सभी के चाय रख दो''

जी ताई

'' साथ में नाश्ता भी''

'' हाँ जी''।

पानी पिया हल्के–हल्के स्वर में गीत को गुनगुनाते हुए

चाय कब बन गई पता ही नही चला। बाहर सबको चाय नाश्ता परोसा और धीरे से ताई को पूछा –

' कौन है यह बेटा ? इसे तो पहले नही देखा।''

'' मेरी छोटी बहन है अभी यह छुट्टियो में आई है।''

'' बहुत चुप सी है ''

''नहीं आंटी जी। कम ही बोलती है। यह।

बस और क्या था बडी माँ ने बात ही बात में उसे परख लिया और ताई से बोला – मेरे बेटे के लिए बहुत अच्छी जोड़ी होगी दोनों की ?

बडी माँ ने अपनी बहू बेटी के सामने देखा कि आँखों के इशारो ने उनकी रजामन्दी को समझ लिया

''वो कुछ समझ पाती कि चाय पीकर अन्दर कमरे में चली गई व लाईट बंद कर फिर बाहर नही जाने के लिए बैठ गई और दरवाजा बंद कर दिया कमरे में गुप अंधेरा छा गया।''

उसे वहाँ नहीं देख ताई अन्दर कमरे में आ गई। उससे पूछा ''क्या हुआ तुझे? अचानक भीतर क्यों चली आई

कोई जवाब नहीं देते हुए उसने ताई से प्रश्न किया ताई! कौन है यह सभी?''

ताई आश्चर्य से उसकी ओर देखने लगी फिर मुस्कुरा गई

बोली – ज्यादा मत सोच मजाक कर रहे है।''

चल अकेले अन्दर नही बैठते, वो भी मुस्कान भरे चेहरे से बाहर चली आई ताई के साथ।

दो घण्टे ऐसे व्यतीत हुए जैसे जिन्दगी के कुछ अनमोल पल । वो मन नही मन सोचती रही मुझे नही जानते फिर भी उनकी अनुभव भरी आँखे कहीं न कहीं फटी मेरी तलाश कर रही है।

सरस्वती किसी से कुछ ना कह सकी क्योंकि ताई के घर पर उसके लिए सब अजनबी सा था ताई के अलावा। उसका शरीर तो ताई के घर था मगर बडी माँ की बात को सुनकर मन कही खो सा गया।

फिर एक दिन ताई से पूछा –ताई! आपसे कुछ पूछना है।''

हाँ! पूछो

''वो उस दिन घर पर जो मेहमान आये थे वो कौन थे?

ताई ने कहा –वो तेरे ताउ के मिलने वाले है अपनी समाज के नही है। इतना सा सुना और उसके मन में उदासी छा गई।

दो घण्टे पश्चात् ताई ने बोला – सरस्वती! एक काम करना है मन हो तो कर लो।

सुनते ही और ज्यादा मुरझा सी गई वो किइस परिस्थिति में अभी क्या काम कर पाऊंगी भला?''

ताई – सुनो वो बड़ी माँ उस रोज अपना सुट सिलाने के लिए के लिए रख गई है मैं अभी व्यस्त हूँ तुम सिल दो ।

हाँ, ताई! सिल देती हूँ।

अभी–अभी सिखी थी वो सिलाई करना इतनी सफाई भी नही थी। ताई हाँ तो बोल दिया पर क्या सिल पाऊंगी? फिर मन की आवाज को सुनकर बैठ गई सूट सिलने।

कुछ नया करने का भाव, मन में उत्सुकता के साथ पुरा सुट बनाया और बड़ी माँ के घर ताई के साथ भिजवा दिया। बहुत पसंद आया उनको सुट। बडी माँ ने उसके लिए ताई को पुछा भी लेकिन उन्होंने बोल दिया की घर पर ही है वह।

सरस्वती के मन में एक ही सवाल बार–बार हिलोरे लेने लगा कि बड़ी माँ को उसकी कला पसन्द आई होगी या नहीं? तब तक ताई का इंतजार करती रही जब तक वो आ नही गई। उनके आते ही उम्मीद भरी नजरें ताई की ओर देखने लगी लेकिन उन्होंने कोई जवाब देना उचित नहीं समझा। अपने काम में व्यस्त हो गई फिर भी ताई के मन को पढ़ लिया उसने, कि सूट पसन्द आ गया।

उसके ह्दय में खुशी तो थी किसी के सामने जिक्र नही कर पायी।

तीन दिन बाद ताई और ताऊ के साथ उनके मौसाजी के घर मिलने जा रही थी। रात का समय कुछ नजर नही आ रहा था। एक रोशनी झिलमिला रही थी सामने खड़ी गाड़ी की कि ताऊ ने मोटरसाईकिल रोक दी।

बोले– इन्दर भईया! आप यहाँ?

कुछ खास नही ऐसे ही टहल रहा था भाई।''

दोनों बाते करने लगे रास्ते में और ताई भी दोनों के साथ बहुत जल्द ही गुलमिल गई। गुस्सा आया उसे कि क्यो रास्ते में किसी से भी बाते करने लग गये दोनों, एक बार भी मेरी तरफ ध्यान देना जरूरी नहीं समझा। अंधेरे में खड़ी तीनो की बाते सुनने के अलावा कोई और रास्ता नही था उसके पास विचार आया कि मुझे घर ही रूक जाना चाहिए था। ऐसे किसी का ख्याल किये बिना ही रास्ते में कोई बात करता है क्या।

''इन्ही विचारों में मग्न ताई के पिछे से पलके उठाकर इन्दर को देखा तो पता चला

इन्दर उसे ही देख रहा है। इन्दर की अपनी ओर देखती नजरों को उस गाड़ी की टिमटिमाती लाइट में सरस्वती ने देख लिया।''

बडी माँ के बताने के बाद इन्दर सरस्वती को पहले से जानता था परन्तु कभी नही देखा था। दूसरी तरफ सरस्वती के लिए इन्दर पूर्णतया अजनबी था। पुरी तरह अनजान थी कि इन्दर वही लड़का है जिसके बारे में बड़ी माँ रिश्ते की बात कर रही थी।

दस से पन्द्रह मिनट तक हुई सामान्य सी बातचीत ने, व इन्दर की नजरों ने फिर उसे वह सब कुछ सोचने को मजबुर कर दिया जो वह भूलना चाहती थी।

'' वो दिन उसके लिए ताई के लिए आखिरी दिन था।

अगले दिन दोपहर दो बजे की बस से फिर घर जाना था।

घर आकर ताई व ताउ आपस मे बात कर रहे थे तब उसने सुन लिया कि इन्दर बड़ी माँ का बेटा है। सरस्वती इन्दर के बारे में जानने के बाद फिर से उसे देखना चाहती थी लेकिन संभव नही हो सका

छुट्टियां समाप्त हुई घर आकर कॉलेज में दाखिला लिया, अपनी पुरानी दूनिया में जिने लगी अपने मन की बात किसी को बताना चहा उसने पर कोई सहेली नही जिसके सामने स्वयं की परिस्थिति को रख सके। सबसे कम बोलती, गुमसुन सी बार–बार इन्दर के बारे में सोचती रहती।

अपने को इस गहराई से निकालने के लिए धीरे–धीरे क्लास में घुलना मिलना शुरू किया।

सरस्वती हर दम इसी इंतजार मे थी कि फिर छुट्टियों में ताई के घर जाना है इन्दर से मिलना है। एक दिन अचानक समय ने करवट ली कि ताई के घर से उसके लिए बुलावा आया। पिताजी ने माँ को बताया कि,

ताई के ससुर जी की तबीयत बिगड गई है इसलिए सरस्वती की मदद के लिए बुलाया है। दूसरे ही दिन सवेरे किताबें व जरूरी सामग्री ले बेग भर दिया, ताऊ लिवाने आ गये।

एक साल बाद वहीं ताई का घर, वही सुनी दिवारें, वही मौन वही उस दिन बड़ी माँ की गुँजती आवाज। वो किसी के इन्तजार में दिन निकालने लगी पिछले दिनों इस घर में बिताये वक्त के साथ ।

''एक दिन ताई व ताउ अपने पुराने घर गये। पौने छह हो रहे है सरस्वती सुनसान घर में अकेली पढ रही थी। बाहर बारिश हो रही है, मन किया इस बारिश की हल्की–हल्की बुदों से खुद को भिगा दे लेकिन ताई ना बोलकर गई, दरवाजा मत खेलना। अपनी इच्छा को मारकर पढ़ना शुरू कर दिया।

'एक नई आवाज ने किसी के आने की दस्तक दी' –

भाभी! भाभी!

बाहर की लोहे की फाटक के बनजे की आवाज !

उठ कर बंद दरवाजे ये देखा तो पता चला इन्दर और उसके बडे भाई अन्दर की ओर आ रहे है। जाली वाले बंद दरवाजे से ही उसने बोल दिया कि ताई घर पे नही है''

भीतर आने का आग्रह भी नही किया, उसे लगा ताई पुछेगी बिना इजाजत घर के अन्दर क्यों आने दिया, डर रही थी। इन्दर के बडे भाई ने कहा मोटरसाईकिल की चाबी चाहिए, बिना कुछ बोले ताई से फोन पर बात की व दिवार पर टंगी चाबी इन्दर के हाथ

में थमा दी फिर दरवाजा बंद कर दिया। वो उधर ही बहुत देर तक देखती रही इन्दर को जाते हुए निरूद्देश्य सी। फिर आकर पढने बैठ जाती है।

रात में सोती है तो देर तक उसकी आँखों में नींद की एक भी लकीर दिखाई नहीं देती सोचती है – ''एक लडकी के सपने उसकी मंजिल से समाज बहुत सी बार जान कर भी अनजान बन जाता है कि हमारे समाज में लड़कियाँ आन्तरिक संघर्ष को झेलती है''

हृदय की गहराई को सिर्फ वो महसुस कर रही थी उसे नही पता था कि इन्दर उसके बारे में क्या सोचता है इन्दर उससे प्यार करता भी है या नहीं? धीरे–धीरे वक्त आगे बढता गया और सरस्वती भी अपनी पढाई के साथ कॉलेज में प्राध्यापक के पद पर नौकरी करने लगी।

जाडे के दिन थे कि सरस्वती शहर में परीक्षा देने गई, बहुत खुश भी थी तैयारी की थी सफलता प्राप्त करने के लिए। परीक्षा देकर बरामदे में आकर मेज पर फोन को उठाकर देखा परीक्षा देकर आने के बाद बरामदे में आकर ताउ के बहुत से मिस कॉल है, तुरन्त फोन लगाया और इन्दर के बडे भाई ने बात की बेटा कहाँ है? मैं तुझसे मिलने आया हूँ घर। कितना वक्त लगेगा?

''दादू! दो घण्टे में आ जाउंगी''

''ठीक है जल्दी आने का प्रयास करना।''

''जी''

घर से शहर आने में करीब चार घण्टे का समय लगता था, मिलने की उत्सुकता से शहर से घर को रवाना हो गई।

इन्दर के बडे भाई और ताउ सरस्वती का घर के बाहर खड़े बेसब्री से राह देख रहे थे।

''भोजन का समय हो चला है''

'भीतर आकर खाना खा लो ''माँ ने आवाज दी।

सभी को एक साथ देख मन प्रफुल्लित हुआ । ये खुशी ज्यादा देर नहीं रही।

'वे रात को ही वापस जाने को तैयार थे उसे इन्दर के बारे में भाई से बात करने का हुआ, सोचा अभी बात करना मुनासिब नही होगा । समय भी कम है। बड़े भाई ने उसे आशीर्वाद दिया, जाते समय पिताजी से बात ही बात में अप्रत्यक्ष रूप से इन्दर के लिए सरस्वती को मांग लिया।

मध्यवर्गीय समाज में, अपनी सभी बेटियों पर गर्व करने वाले स्वयं को खुशनसीब मानने वाले पिताजी ने इस प्रस्ताव के बारे कुछ ज्यादा विचार नहीं किया होगा। दोनों परिवार में कहीं न कहीं अपनेपन ने जगह बना ली।

इन्दर और सरस्वती अभी भी सम्पर्क में नही आये, हाँ! दोनों अपनी दुनिया में गुजरते जा रहे थे।

पिताजी का सपना था कि उसका भाई उँची पढ़ाई करे अपना व पुरे गाँव का नाम रोशन करे परन्तु भाई की निरसता जिन्दगी के अनेक उतार–चढ़ाव ने पिताजी की अपने बेटे को लेकर हर आस टुट गई। जब उसे इसके बारे में पता चला तो उसके पास भी यह स्वर्णिम

अवसर जा चुका था, वो मन ही मन ठान बैठी कि पिताजी और माँ की आँखों में फिर से वो उम्मीद, चमक देखनी है जो कहीं खो गई है।

अपनी नई आशाओं की उडान भरी। अरसे बाद उसने पिताजी का विश्वास पाया और साथ पिता को बेटी के भविष्य की चिन्ता सताये रहती लेकिन वो अभी भी बड़ी माँ की तलाश को स्वयं तक खत्म समझ रही थी।

गुजरते समय के साथ एक दिन अचानक अनचाहा सा हिस्सा नजरों के सामने आकर खडा हो गया। जब उसे पता चला बडी माँ बीमार है। रोक नही पाई वो खुद को। उनकी चाह ने सरस्वती को अपने पास बुला लिया, उन्हे देख अन्दर ही अन्दर बहुत रोई, उसके बस में कुछ नहीं था कि बड़ी माँ को फिर से ठीक कर पाये। बड़ी माँ से मिली, आज इन्दर घर नही था। काम से बाहर गया था।

क्यों इन्दर आज तुम मुझे नहीं मिले? मुझे तुम्हारी बहुत याद आ रही है।

''काश! तुम मुझे हमारी बड़ी माँ के साथ देख पाते।''

''काश! बड़ी माँ भी हमको एक साथ देख पाती।''

सारी उम्मीद उस दिन खत्म हो गई जब बडी माँ छोडकर चल बसी।''

उसे इन्दर के परिवार से कभी बेरूखी नहीं मिली ना ही इन्दर से। सरस्वती के परिवार ने कभी उसकी नजरों को किसी ने समझने की कोशिश नहीं की। वो भी समाज के, अपनों को खोने के डर से हमेशा चुप रही। अपने अहसासों को चल अन्दर

मारती रही। बडी माँ के जाने से पहले उनके घर एक नये मेहमान ने दस्तक दी ''इन्दर के बडे भाई का बेटा, ''युवराज'' जिसने सरस्वती व इन्दर को बात करने का मौका दिया।

'युवराज' की खबर पुछने के बहाने इन्दर से पहली दफा फोन पर बात करने की खुशी सातवें आसमान पर थी। मन में इन्दर को लेकर कोमल भावनाऐं हिलोरे लेने लगी साथ ही दुनिया का डर क्योंकि ये दुनिया प्यार के रिश्ते को कलंक समझती है।

हालात ने दोनों को बार–बार एक करना चाहा दोनों को एक–दूसरे के सामने लाकर खडा कर दिया। दोनों ही इतने अनभिज्ञ कि नजरे चुरा रहे थे।

''हृदय की गहराई उम्र का स्थाईत्व एक–दूसरे को गले लगाने की इच्छा सब कुछ।''

उन दोनों को एक परिवार समझ रहा था तो सरस्वती का परिवार कुछ देखना ही नहीं चाहता था। इन चार–पाँच बरस में उसकी जिन्दगी में उतार–चढाव बहुत आये लेकिन उसकी इन्दर को लेकर कभी उम्मीद खत्म नहीं हुई। आधुनिक समय में लड़कों का बर्ताव, समाज के ताने सारी दुनिया की भर्त्सना, अपनों की बेरूखी, दोहरे चरित्र को जीने वाले लोगों से आमना–सामना, हर मोड पर लोगों का दिखावा, तिरस्कार, दया का विष दोस्तों का प्यार और प्रेरणा ने उसे और भी मजबुत बनाये रखा।

कई सवाल उसके जहन में थे, बहुत कुछ जानना चाहती है वह, अपनी जिन्दगी को एक मंजिल तक ले जाना है जो अभी तक भूल नहीं पायी।

हर सवाल का जबाव समाज व परिवार की इज्जत पर आकर खत्म हो जाता। ऐसा लगता जैसे किसी चौराहे पर खडी है और सारे रास्ते अज्ञात है। ''क्यों सरस्वती अपनी राह खुद नही चुन सकी।''

''क्यों अपनी दुनिया में उन रंगो को नही भर सकती जो रंग उसने और इन्दर ने मिलकर संजोये है।''

इन्दर उसे कई बार मिला हर बार दोनों के बीच चुप्पी। बहुत कोशिश की उसने ताई घर वालों से बात करे। एक बार साहस करके उसने ताई से दिल की बात बोल दी क्योंकि पिताजी उसकी शादी कही और जगह कराने चाहते थे।

''ताई! मुझे इन्दर से शादी करनी है, आप माँ–पिताजी से बात करो ना!

ताई सब सुन लेती है किन्तु हर बार की तरह आज भी निरूत्तर है। वो सरस्वती की आशा भरी नजरों को देखती है और वहाँ से चली जाती है। सच तो यह था कि इस वक्त तो ताई के मुँह से हाँ सुनने के लिए तरसती रह जाती है।

''जब भी सरस्वती को अकेला देखती मानों ऐसा प्रतीत होता कि किसी की तलाश कर रही है। घर पर सबसे बोलती लेकिन शब्द खोये हुये से, शब्दों में खामोशी सी भरी रहती। जब भी मुस्कुराती तो ऐसा लगता कि सबको खुश होने

का दिखवा कर रही है। जो भीतर दर्द था उस दर्द को कोई परख नहीं रहा था। घर पर सभी अपनी–अपनी दुनिया में बहुत खुश थे।

सब कुछ इन्दर के ऊपर छोड़ दिया। इन्दर ने सरस्वती की हर बात का सम्मान किया ताकि उसे परिवार से कोई भी दुख नहीं मिले। जब भी वो अपने जज्बात इन्दर के सामने रखती वह सुन लेता किन्तु प्रतिक्रिया कोई नहीं होती पता नहीं, इन्दर में इतनी सहनशीलता कैसे थी, कि हर बार उसे बिखरने से रोक लेता।

आँगन के बाहर चारपाई पर जब वो अपनी गुजरी यादों के सुनहरे लम्हों को बंद आँखों से देखने लगी तब उन सुनहरे पलों में इन्दर दिखाई दिया। इन्दर की आँखों में स्वयं के लिए छलकता प्यार, इन्दर की बैचेनी को इस कदर महसुस करने लगी जैसे वो उसके सामने प्रत्यक्ष उपस्थित हो। पलके उपर उठाई सब कुछ ओझल हो चुका था।

भविष्य की चिन्ता में परेशान होने की बजाय इन्दर ने सरस्वती के सामने शहर से बाहर अकेले मंदिर जाने का प्रस्ताव रखा।

''सुनकर बहुत हेरानी हुई, साथ जाना उचित होगा या नहीं?''

''कोई क्या सोचेगा अगर साथ देख लिया तो ?''

''कहीं मैनें आवेश में आकर कुछ कह दिया तो मै इन्दर को खो न दूँ?''

बहुत असमजस्यता के बाद स्वयं को रोक नहीं पायी साथ जाने के लिए हाँ बोल दिया।

रात भर बैचेनी में नींद नहीं आयी। सुबह रिक्शा लेकर घर से रवाना हुई, जाने कैसी विचित्र शंका विचित्र सा डर उसको घेरे हुए।

''रिक्शा से उतरकर देखा कि इन्दर पहले से उसको लेने के लिए खड़ा है।'' दोनों साथ मन्दिर जाने के लिए रवाना हुए । पुरे सफर में कोई खास बात नहीं। रास्ते में उँची–उँची पहाड़ियाँ, सड़क किनारे दिखती खाई, चारों ओर के वातावरण से किसी विराटता का आभास होता, देखते–देखते मन्दिर आ गया।

इन्दर ने मंदिर की ओर इशारा करते हुए मंदिर में प्रवेश करने लगा, बढ़ते कदम के साथ दोनों के मन का विश्वास दृढ़ होता गया।

दर्शन करने के बाद इन्दर ने उसे बताया कि ''पहली बार वो यहाँ बड़ी माँ के साथ आया था। इसलिए आज उसे भी इस पवित्र स्थान पर रूबरू होना था।''

कुछ बोले बिना इन्दर के साथ बाहर निकल आयी।

थकान के कारण इन्दर ने चाय पिने का फैसला किया। बैठकर चाय की चुस्कियों के साथ दोनों बाते करने लगे, अकस्मात याद आया । अब घर चलना चाहिए।

''जैसे– जैसे समय सरक रहा था इन्दर का मन अवसाद में डुबा ज रहा था। शहर आकर वह सरस्वती को अनमने मन से कॉलेज छोडकर चला गया।

शिक्षा और पाश्चात् जीवन शैली ने देश में बहुत कुछ बदलाव किया। लोगों के सामाजिक

रीति – रिवाज रहने के तौर तरिके, अपनी रूचि–अरूचि इत्यादि। ज्यादातर गाँवों में जीवन के दृष्टिकोण, पारम्परिकता व वृद्ध मनुष्य के विचारों में आज भी प्रौढ़ता छायी हुई थी।

सरस्वती की माँ अक्सर बेटी को लेकर चिन्तित रहती। पिताजी से कहती –

''बिटिया के भविष्य के बारे मे सोचा भी है आपने या नहीं।''

''छोटी बच्ची नहीं रही बडी हो गई है।''

'अभी पढाई कर रही है तो करने दो, जिस तरह से मेहनत अभी कर रही है बाद में नही कर पायेगी।'' सही समय पर उसके लिए अच्छा पढ़ा–लिखा लड़का मिल जायेगा। तुम बिल्कुल चिन्ता मत करो।''

''सुनते हो आप सिर्फ उसकी पढ़ाई देख रहे जी, लोगों के ताने तो मुझे सुनने पडते है, घर में तो पुरा दिन मैं गुजारती हूँ।''

''क्या उत्तर दूँ इस जमाने को।''

''पिता और बेटी में मुझे बीच में खडा करके अपनी करने का ठान रखा है।''

आज पिताजी बिल्कुल चुप है।

''देखो जी! कुछ तो ख्याल करो । हम किस – किस का मुँह बंद करे।

पिताजी अपने कमरे में जाकर सो गये। उस दिन पिताजी ने आज से पहले माँ को कभी इतना दृढ़ नहीं देखा।

माँ भी पिताजी पर नाराज होकर अपने काम में लग गई। वास्तविकता यह थी कि पिताजी को माँ से कही ज्यादा परवाह थी सरस्वती की। इस परिस्थिति को सरस्वती स्वयं भी जानती थी। वो जानती है कि घर वालों का मेरे लिए सोचना फिजुल नहीं है लेकिन इन्दर उसे नही मिला तो इतने लम्बे सफर में समझौता नहीं कर पायेगी। सरस्वती में माँ के सवालों का पलटकर जबाव देने का साहस भी नही है।

बदलते मौसम और बदलते समय के साथ इन्दर का प्रेम उसके लिए और गहरा होता जाता।

जमाने के बंधन ने उन्हें अपनी उडान भरने में उनके पंख बांध रखे थे। ''दुनिया की भीड में दोनों दिल से साथ थे लेकिन एक–दूसरे की खुशी को देखे बिना सभी को खुश करने के लिए कोसों दूर।''

सरस्वती व इन्दर नौकरी करते है, हर पल इन्तजार में कहीं बरस अलग रहे। उन्हें अपने प्रेम ने ह्दय से कभी एक–दूसरे से जुदा नहीं होने दिया। लेकिन फिर भी जुदाई जीते रहे क्योंकि सरस्वती इन्दर की आखिरी ख्वाहिश थी।

एक बार फिर इन्दर स्वयं को रोक नही पाया, चल दिया सरस्वती से मिलने और वो भी इन्दर के पास बहुत कुछ कहना था शायद वो कुछ पूछना चाहता

था'' सरस्वती से। सरस्वती को देखकर वो सारे प्रश्न भुल गया।

'इन्दर के बदन की खुशबु पुरे कमरे में फैल गई।'

इन्दर के लिए चुप रहना असम्भव सा हो रहा था। क्योंकि मिलने का समय भी बंधा हुआ था, इन बाहर बैठे वो परिन्दों की तरह।

''धीरे से सरस्वती की इजाजत लेकर उसके कंधे पर सिर टिका दिया, इन्दर का पहला स्पर्श उसे पुलकित कर रहा है। सरस्वती अपनी भावनाओ पर नियंत्रण नहीं रख पाती।

''क्या हुआ सरू!बात क्यो नही करती हो?

कुछ नहीं हुआ इन्दर!

इतनी चुपचाप क्यों हो अपने इन्दर के सामने? मै तुमसे ही बात करने आया हुँ।

''तुम से कुछ भी चुपा हुआ नहीं है फिर आज से सवाल क्यों इन्दर?''

''देखो सरू! मै तुमसे बहुत प्यार करता हूँ लेकिन तुम्हे मेरी वजह से किसी मुसीबत में नही डालना चाहता। तुम्हारे परिवार से कभी तुम्हे दूर नही करना चाहता।''

''और हम दूर रहे उसका क्या इन्दर?''

'सरू ! ऐसे सोचकर परेशान नहीं होते।''

'इन्दर को सुनते हुए जब उसकी पसीने की बुन्दे उसको स्पर्श कहती है तो वह अपने हाथ से उन बुन्दों का साफ करने का प्रयत्न करती।''

''तुम कुछ मत बोलो सरू मैं तुम्हारी पीडा को कैसे कम करू?

तुम तो हमेशा से मेरी हिम्मत रही है। और तुम्हें ही हरता हुआ नहीं देख सकता।'' प्यार से सरस्वती के बाल सहलाने की कोशिश करता है। इन्दर चाहता है कि सरस्वती उसके ह्दय में झांक के देखे कि उससे अलग रहने की पीड़ा यहाँ भी है।''

घड़ी की सुई अपने मुताबिक थी। सरस्वती के लिए समय भाग रहा था। इस पल को वह रोकना चाहती है मगर ये सोचना ही निरर्थक था उसके लिए उस रोज पहली बार उसे बगले लगाया, स्वयं में सरस्वती के होने के अहसास को शामिल कर लिया। पहली बार उसने इन्दर को इतना करीब से जाना।

अपने प्रेम, विश्वास के आधार पर उसे वो सभी अधिकार दिये जो दुनिया की रीति–रिवाज से कहीं पहले थे। ''सिर्फ प्रेम के खातिर।''

सरस्वती के बस का समय हो गया इन्दर स्टेशन पर छोडने आया, वो बिना कुछ बोले चली गई। बहुत दुर तक देखता रहा वह किन्तु सरस्वती ने एक बार भी पिछे मुड़कर नहीं देखा। थोडी देर में सब ओझल हो गया।